Vol 6 Issue 11 Dec 2016

ISSN No : 2230-7850

International Multidisciplinary Research Journal

Indian Streams Research Journal

Executive Editor
Ashok Yakkaldevi

Editor-in-Chief
H.N.Jagtap

Welcome to ISRJ

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2230-7850**

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Dr. T. Manichander

Mr. Dikonda Govardhan Krushanahari
Professor and Researcher ,
Rayat shikshan sanstha's, Rajarshi Chhatrapati Shahu College, Kolhapur.

International Advisory Board

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

.....More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.org

Indian Streams Research Journal

ISSN: 2230-7850 Impact Factor : 4.1625(UIF) Volume - 6 | Issue - 11 | December - 2016

भक्ति–भक्त–भगवन्त

शिवशंकर नापित[1] एवं डॉ. रमाशंकर द्विवेदी[2]
[1]शोधार्थी, संस्कृत विभाग, शास. ठाकुर रणमत सिंह (स्वशासी) महाविद्यालय रीवा (म.प्र.)
[2]आचार्य, शास. स्वामी विवेकानन्द महाविद्यालय त्योंथर रीवा (म.प्र.)

सारांश –
भक्ति के प्राधान्य से मन निर्मल होता है और भक्त का दर्शन होता है। भक्त के दर्शन के बाद भगवन्त का दर्शन होता है। भगवत् दर्शन से मुक्ति प्राप्त होती है जो इस संसार के जीवों के लिए आवश्यक है। कोई मूर्तिपूजा करके भी भगवत्प्राप्ति करते हैं वह भी मार्ग सही है। भगवान् की कृपा किस रूप में हो जाय यह कोई नहीं जानता। अस्तु निर्मल अन्तःकरण करके यदि उसे पुकारा जाय तो वह दूर नहीं है। वह तो घट–घट वासी है। भगवत्दर्शन प्राणी का श्रेय अवश्य होना चाहिए।

मुख्य शब्द – भक्ति, भक्त, भगवन्त एवं भगवत्दर्शन ।

प्रस्तावना –
मूर्तिपूजा का प्रारम्भ आदि काल से प्रचलन में है। यह आस्था का प्रतीक है, इसके माध्यम से लोगों में आत्मबल बढ़ता है और अभिवृद्धि होती है। पूर्वकाल में अपने अभीष्ट के प्रति समर्पण एवं अनुचित का त्याग सर्वश्रेष्ठ शिखर तक पहुंचाता था। धार्मिक कार्य में संलग्न व्यक्ति पद, प्रतिष्ठा एवं प्रभूत सम्पत्ति का अधिकारी होता है। कुछ महापुरुष ऐसे भी हुए जिनका स्वर्ग तक आवागमन हमेशा होता रहा। उनमें राजा एवं सामान्य जन दोनों ही सम्मिलित हैं। वैदिक काल से आज तक पुरूरवा आदि राजा का नाम इसी तथ्य को सूचित करता है कि ये कितने महत्तम थे। कालिदास ने इसीलिए इनके चरित को आधार बनाया है। तनिक इनके चरित का आलोडन आवश्यक है।
पुराणों में नाना प्रकार के देवताओं का वर्णन प्राप्त होता है। इन्द्र जो

वैदिक काल के प्रधान देवता थे, पौराणिककाल में भी कुछ समय तक उनका वर्चस्व चला। परन्तु भगवान् श्रीकृष्ण ने उनकी पूजा अर्चना इसलिए बन्द करवा दिये, क्योंकि वे अहंकारी होते जा रहे थे। तब से अद्यावधि वे गौण देवता के रूप में ख्याति प्राप्त किये हुए है। इसी तरह वरुण भी श्रेष्ठ देवों में परिगणित है। वरुण का प्राधान्य तब खत्म होता है, जब वे वसुदेव को अपने अनुचरों द्वारा अपने लोक को बुला लेते हैं और भगवान् को स्वयं उन्हें प्रत्यावर्तित करने के लिए जाना पड़ा था।

विश्लेषण –
भक्ति से अन्तरात्मा प्रसन्न होता है। अन्तरात्मा अर्थात् अन्तःकरण। अन्तकरण की प्रसन्नता तो रज, तम के राहित्य से सम्भव है। रज, तम कम हो जाय सत्व का प्राधान्य हो जाय तभी अन्तःकरण की प्रसन्नता सम्भव है। सत्व का प्राधान्य होगा तो प्रकाश होगा, वैराग्य होगा, विवेक होगा। वैराग्यावैराग्य, ऐश्वर्यानैश्वर्य, ज्ञानाज्ञान और धर्माधर्म ये सब अन्तःकरण के धर्म हैं। अन्तःकरण तामस, राजस होता है तो अवैराग्य, अधर्म और अनैश्वर्य का प्राधान्य होता है। जब सत्व का विकास होता है तो ऐश्वर्य, ज्ञान, वैराग्य, धर्म का प्राधान्य होता है। तभी मन प्रसन्न अर्थात् निर्मल हो जाता है। रजस्तमोलेशाननुविद्ध हो जाता है। तभी भगवत्तत्व समझ में आता है। जिसका अन्तरात्मा पवित्र नहीं है, उसे तो तत्वोपदेश सुनने पर भी भगवत्तत्व समझ में नहीं आता है।

नस्मादेकेन मनसा भगवान् सात्वतां पतिः।
श्रोतव्यः कीर्तितव्यश्च ध्येयः पूज्यश्च नित्यदा।।
नष्ट प्रायेष्वभद्रेषु नित्यं भागवत सेवया।
भगवत्युत्तमश्लोके भक्तिर्भवति नैष्ठिकी।।
तदा रजस्तमो भावाः कामलोभादयश्च ये।
चेत् एतैरनाविद्धं स्थितं सत्वे प्रसीदति।।
एवं प्रसन्न मनसो भगवद्भक्ति योगतः।
भगवत्तत्व विज्ञानं मुक्तसंगस्य जायते।।

अतः सर्वदा एकाग्र चित्त से सात्वतों के स्वामी भगवान् श्री हरि का ही श्रवण, कीर्तन, ध्यान और पूजन करना चाहिए। तत्सामायिक अन्य देवों में अग्नि उषस्, पर्जन्य, सूर्य, चन्द्र,वैश्वानर, अश्विनी कुमारादि देव पूजित थे और लोगों का विश्वास भी इनके प्रति अत्यधिक था। विश्वास का परिणाम भी मिलता था जिसके कारण समृद्धि प्राप्त करते थे।
पुरूरवा वैदिक काल से लेकर आधुनिककाल तक किसी न किसी रूप में वर्णित है। पुरूरवा धर्म, अर्थ और काम का समानरूप से ही पालन करते थे। पूर्वकाल में एक बार धर्म, अर्थ और काम कुतूहलवश यह देखने के लिये राजा के निकट आये कि यह हम लोगों को समानरूप से कैसे देखता है। उनके मन में राजा के चरित्र को जानने की अभिलाषा थी। राजा ने उन्हें भक्तिपूर्वक अर्घ्य–पाद्य आदि प्रदान किया। तत्पश्चात् स्वर्णजटित तीन दिव्य आसन लाकर उन पर उन्हें बैठाया और उनकी पूजा की । इसके बाद उन्होंने पुनः धर्म की कुछ अधिक पूजा कर दी। इस कारण अर्थ और काम राजा पर अत्यन्त कुद्ध हो उठे। अर्थ ने राजा को शाप देते हुए कहा– 'तुम लोभ के कारण नष्ट हो जाओगे।' काम ने भी कहा– 'राजन्! गन्धमादन पर्वत पर स्थित कुमार वन में तुम्हें उर्वशीजन्य वियोग से उन्माद हो जायगा।' धर्म ने कहा– 'राजेन्द्र ! तुम दीर्घायु और धार्मिक होगे। तुम्हारी संतति करोड़ों प्रकार से वृद्धि को प्राप्त होती रहेगी और जब तक सूर्य, चन्द्रमा तथा तारागण की सत्ता विद्यमान है, तब तक उनका भूतलपर विनाश नहीं होगा।' यों कहकर वे सभी अन्तर्हित हो गये और राजा राज्य का उपभोग करने लगे –

आसनत्रयमानीय दिव्यं कनकभूषितम्।

Volume - 6 | Issue - 11 | December - 2016

निवेश्याथाकरोत् पूजामीषद् धर्मेऽधिकां पुनः।।
कामोऽप्याह तवोन्मादो भविता गन्धमादने।
कुमारवनमाश्रित्य वियोगादुर्वशीमिवात्।।

राजराजेश्वर पुरूरवा प्रतिदिन देवराज इन्द्रको देखनेके लिये (अमरावतीपुरी) जाया करते थे। एक बार वे सूर्यके साथ रथपर चढ़कर गगनतलके दक्षिण भागमें विचरण कर रहे थे, उसी समय उन्होंने दानवराज केशिद्वारा चित्रलेखा और उर्वशी नाम्नी अप्सराओंको आकाशमार्गसे ले जायी जाती हुई देखा।' तब विविधास्त्रधारी यशोऽभिलाषी बुधनन्दन पुरूरवाने समरभूमिमें वायव्यास्त्रका प्रयोग करके उस दानवराज केशिको पराजित कर दिया, जिसने संग्राममें इन्द्र को भी परास्त कर दिया था। तत्पश्चात् राजा ने उर्वशी को ले जा कर इन्द्र को समर्पित कर दिया, जिससे उनकी देवोंके साथ प्रगाढ़ मैत्री हो गयी। तभी से इन्द्र भी राजाके मित्र हो गये। फिर इन्द्र ने प्रसन्न होकर राजा को समस्त लोकोंमें श्रेष्ठता, अत्यधिक बल, पराक्रम, यश और सम्पत्ति प्रदान की। साथ ही भरत मुनिद्वारा उनके महान् चरित्रका गान भी कराया। उर्वशी पुरूरवाके प्रेमसे उनके महान् चरित्र का गान करती रहती थी। एक बार भरत मुनिद्वारा प्रर्वतित 'लक्ष्मीस्वयंवर' नाटक का अभिनय हुआ। उसमे इन्द्र ने मेनका, उर्वशी और रम्भा तीनों का नाचने का आदेश दिया। इनमें उर्वशी लक्ष्मी का रूप धारण करके लयपूर्वक नृत्य कर रही थी। (पर) नृत्यकाल में पुरूरवाको देखकर अनुराग से सुधबुध खो जाने के कारण भरत मुनि ने उसे पहले जो कुछ अभिनयका नियम बतलाया था, वह सारा–का सारा उसे विस्मृत हो गया। तब भरत मुनि ने क्रोध के वशीभूत हो उसे शाप देते हुए कहा– 'तुम इसके वियोग से भूतल पर पचपन वर्ष तक सूक्ष्मलता के रूप में उत्पन्न होकर रहोगी और पुरूरवा वहीं पिशाच–योनिका अनुभव करेगा।

तत्पश्चात् उर्वशी ने पुरूरवा के पास जाकर चिरकाल के लिये उनका पतिरूप में वरण कर लिया। भरत मुनि द्वारा दिये गये शाप की निवृत्ति के पश्चात् उर्वशी ने बुधपुत्र पुरूरवाके संयोग से आठ पुत्रों को जन्म दिया। उनके नाम थे–आयु, दृढ़ायु, अश्वायु, धृतिमान्, वसु, शुचिविद्य, और शतायु। ये सभी दिव्य बल–पराक्रम से सम्पन्न थे। इनमें आयु के नहुष, वृद्धशर्मा, रजि, दम्भ और विपाप्मा नामक पाँच महारथी वीर पुत्र उत्पन्न हुए। रजि के सौ पुत्र पैदा हुए, जो राजेय नामसे विख्यात हुए। रजिने पापरहित भगवान् नारायण की आराधना की।

उनकी तपस्या से प्रसन्न हुए भगवान् विष्णु ने राजा को अनेकों वर प्रदान किये, जिससे वे उस समय देवों, असुरों और मनुष्यों के विजेता हो गये। तदनन्तर प्रह्लाद और इन्द्र का भयंकर देवासुर– संग्राम छिड़ गया, जो तीन सौ वर्षों तक चलता रहा, परंतु उन दोनों में कोई किसी पर विजय नहीं पा रहा था। तब देवताओं और असुरों ने मिलकर देवाधिदेव ब्रह्मा से पूछा –'ब्रह्मन्! इन दोनों में कौन (पक्ष) विजयी होगा?' यह सुनकर ब्रह्माने उत्तर दिया–' जिस पक्ष में राजा रजि रहेंगे (वही विजयी होगा)।' तब दैत्योंने राजाके पास जाकर अपनी विजय के लिये उनसे प्रार्थना की कि 'आप हमारे सहायक हो जायँ।' उनकी प्रार्थना सुनकर रजिने कहा–' यदि मैं आप लोगों का स्वामी हो जाऊँ तभी उपयुक्त सहायता हो सकेगी।' परन्तु असुरों ने उस प्रस्ताव को स्वीकार नहीं किया, किन्तु देवताओं ने उसे स्वीकार करते हुए कहा– 'राजन्! आप हम लोगों के स्वामी हो जायँ और संग्राम में शत्रुओं का संहार करें।' तदनन्तर राजा रजिने उन सभी असुरों को मौत के घाट उतार दिया, जो इन्द्रद्वारा अवध्य थे। इस कर्मसे प्रसन्न होकर देवराज इन्द्र राजा के पुत्र बन गये। तब राजा रजि इन्द्र को राज्य समर्पित कर स्वयं तपस्या करने के लिये चले गये।

इसी तरह वशिष्ठ और पराशर का आख्यान भी है। महातेजस्वी वसिष्ठजी निमिके पूर्व पुरोहित थे। उनके सदा चारों ओर यज्ञ होते रहते थे। पार्थिवश्रेष्ठ! किसी समय यज्ञों का सम्पादन कराने से श्रान्त हुए गुरु वसिष्ठ विश्राम कर रहे थे, उसी समय राजाओं में श्रेष्ठ निमिने उनके पास जाकर इस प्रकार कहा–'भगवन्! मैं यज्ञ करना चाहता हूँ, अतः मेरा यज्ञ कराइये, देर मत कीजिये।' यह सुनकर महातेजस्वी वसिष्ठजी ने राजश्रेष्ठ निमिसे कहा–'राजन्! मैं आपके श्रेष्ठ यज्ञों का अनुष्ठान कराने से थक गया हूँ, अतः कुछ काल तक प्रतीक्षा कीजिये। नरेश! विश्राम कर लेने के बाद मैं पुनः यज्ञ कराऊँगा।' ऐसा कहे जाने पर राज्यश्रेष्ठ निमिने वसिष्ठजी को इस प्रकार उत्तर दिया–ब्रह्मन्! परलोक–संबंधी कार्य में कौन मनुष्य प्रतीक्षा करना चाहेगा? बलवान् यमराज से मेरी कोई मित्रता तो है नहीं, अतः धर्मकार्य में शीघ्रता ही करनी चाहिये; क्योंकि जीवन क्षणभंगुर है। धर्मरूप ओदनको पथ्य बनाने वाला प्राणी मरने पर भी सुख का उपभोग करता है। इसलिये कल होने वाले कार्य को आज ही एवं दूसरे प्रहर संपादित होने वाले कार्य को पूर्व प्रहर में ही सम्पन्न कर लेना चाहिए; क्योकि मृत्यु इस बात की प्रतीक्षा नही करती कि इसने अपना कार्य कर लिया है अथवा नहीं। अतः मृत्यु खेत, बाजार और गृह में आसक्त या अन्यत्र कहीं आसक्त मनवाले मनुष्य को उसी प्रकार लेकर चल देती हैं जैसे भेड़िया मृग के बच्चे को लेकर चला जाता है। काल का न तो कोई प्रिय है और न कोई द्वेष्य ही है। आयु के साधक कर्मके क्षीण होते ही वह बलपूवर्क मनुष्य का अपहरण कर लेता है। प्राणवायु की चंचलता तो आप भी जानते ही हैं। ब्रह्मन्! ऐसी दशा में जो क्षणभर भी जीवित रहता है, यही आश्चर्य है। विद्या के अभ्यास और धनके उपार्जन में शरीर को चिरस्थायी समझना चाहिये, किंतु धर्म–कार्य में उसे क्षणभंगुर मानना चाहिये। ऐसे संकट के समय मैं ऋणी बन गया हूँ, अतः मैं सभी द्रव्यों का आयोजन कर आपके चरणों के निकट आया हूँ। यदि इस समय आप मेरा यज्ञ नही करायेंगे तो मैं किसी अन्य याजक के पास जाऊँगा।'

तब उन निमिद्वारा इस प्रकार कहे जाने पर ब्राह्मणश्रेष्ठ वसिष्ठने क्रोधपूर्वक निमिको शाप देते हुए कहा–'नरेन्द्र! यदि तुम धर्म के ज्ञाता होकर भी मुझ थके हुए पुरोहित का परित्याग कर किसी अन्य ब्राह्मणश्रेष्ठ को याजक बनाना चाहते हो तो तुम शरीर रहित हो जाओगे।' तब निमिने उत्तर दिया–'मैं धार्मिक कार्य के लिये उद्यत हूँ, किन्तु आप इसमें विघ्न डाल रहे हैं तथा दूसरे के द्वारा यज्ञ सम्पन्न होने देना भी नहीं चाहते, अतः मैं भी आपको शाप दे रहा हूँ कि आप भी विदेह हो जायँगे।' ऐसा कहते ही वे दोनों ब्राह्मण और राजा शरीर रहित हो गये। तब उन दोनों के देहहीन जीव ब्रह्मा के पास गये। उन दोनों को आया हुआ देखकर ब्रह्मा इस प्रकार बोले–'निमिरूप जीव! आज से मैं तुम्हारे लिये एक स्थान दे रहा हूँ। राजन्! तुम सभी प्राणियों के नेत्रों के पलकों में निवास करोगे। तुम्हारे संयोग से ही उनके निमेष–उन्मेष (आँख का खुलना बन्द होना) होगें। तब सभी मानव नेत्रों के पलकों को चलाते रहेंगे।' इस प्रकार कहे जाने पर निमिका जीव ब्रह्माके वरदान से सभी मनुष्यों के नेत्र–पलकों पर स्थिर हो गया।

तदनन्तर भगवान् ब्रह्माने वसिष्ठ के जीव से कहा–'वसिष्ठ! तुम मित्रावरुण के पुत्र हो जाओगे। वहाँ भी तुम्हारा नाम वसिष्ठ ही होगा और तुम्हे बीते हुए दो जन्मों का स्मरण बना रहेगा। इसी समय मित्र और वरुण–दोनों बदरिकाश्रम में आकर दुष्कर तपस्या में तत्पर थे। इस प्रकार उन दोनों के तपस्या में रत रहने पर किसी समय वसन्त–ऋतु में जब सभी वृक्ष और लताएँ पुष्पित थीं, मन्द–मन्द मनोहर पवन प्रवाहित हो रहा था, सुन्दरी उर्वशी पुष्पों को चुनती हुई वहाँ आयी। वह महीन लाल वस्त्र धारण किये हुए थी। संयोगवश वह उन दोनों तपस्वियों के आँखों के सामने आ गयी। उसके नेत्र नील कमल के समान थे तथा मुख चन्द्रमाके समान सुन्दर था। उस सुन्दर भौंहोवाली उर्वशी को देखकर उसके रूप पर मोहित हो उन दोनों तपस्वियों का मन क्षुब्ध हो उठा। तब तपस्या करते हुए ही उन दोनों का वीर्य मृगासनपर स्खलित हो गया। तब शाप से भयभीत हुई सुन्दरी उर्वशी ने उस वीर्य को जलपूर्ण मनोरम कलश में रख दिया । उस कलश से वसिष्ठ और अगस्त्य नामक दो ऋषिपुत्र उत्पन्न हुए, जो भूतलपर अनुपम तेजस्वी थे। वे मित्र और वरुण के पुत्र कहलाये। तदनन्तर वसिष्ठ ने देवर्षि नारद की बहन सुन्दरी अरुन्धती से विवाह किया और उसके गर्भ से शक्ति नामक पुत्र को उत्पन्न किया।

सत्पुरुषों के साथ समागम होने पर कैसा परिश्रम? और कैसा दुःख? आप–जैसे महानुभावों के समीप में मुझे किसी प्रकार की ग्लानि नहीं है। चाहे साधु प्रकृति के हों या असाधु प्रकृति के, सभी के निर्वाहक सदा सत्पुरुष ही होते हैं, किन्तु असत्य पुरुष न तो सज्जनों के काम आ सकते हैं, न असत्पुरुषों के ही और न स्वयं अपना ही कल्याण कर सकते हैं। विष, अग्नि, सर्प तथा शस्त्र से लोगों को उतना भय नहीं होता, जितना अकारण जगत् से

Volume - 6 | Issue - 11 | December - 2016

वैर करने वाले दुष्टों से होता है। जैसे सत्पुरुष अपने प्राणों का विसर्जन करके भी परोपकार करते हैं, उसी प्रकार दुर्जन भी अपने प्राणो का परित्याग कर दूसरे को कष्ट देने में तत्पर रहते हैं। जिस परलोक की प्राप्ति के लिये हम सत्पुरुष अपने प्राणों को भी तृण के समान त्याग देते हैं, उसी परलोक की परायी हानि में निरत रहने वाले दुर्जन कुछ भी चिन्ता नही करते। स्वयं जगद्गुरु ब्रह्मा ने सभी प्राणि–समूहो में असत्प्राणियों के निग्रहके लिये राजा को नियुक्त किया है। राजा सर्वदा पुरुषों की परीक्षा करे। जो सज्जन हो, उनका आदर करे और दुष्टों को दण्ड दे। जो ऐसा करता है, वह सभी लोक विजेता राजाओं में श्रेष्ठ है, सत्पुरुषों को सम्मान देने तथा दुष्टों का निग्रह करने के कारण ही वह राजा है। स्वर्ग–प्राप्तिकी इच्छा करने वाले राजा को इन दोनों कार्यों का पालन करना चाहिये। राजाओं के लिये सत्पुरुषों के परिपालन तथा दुष्टों के नियमन के अतिरिक्त दूसरा कोई राजधर्म संसार में नहीं है उन राजाओं द्वारा भी जो दुष्ट शासित नही किये जा सकते, ऐसे दुर्जनों के शासक आप हैं, इसी कारण आप मुझे सभी देवताओं से आधिक महत्वशाली देवता प्रतीत हो रहे हैं।

निष्कर्ष –

यह जगत् सत्पुरुषों द्वारा धारण किया जाता है तथा आप उन सत्पुरुषों के अग्रणी है, इसलिये आपके पीछे चलते हुए मुझे कुछ भी क्लेश नहीं है। इस तरह यज्ञानुष्ठान में राजा से लेकर प्रजा तक सम्मिलित होकर लोक कल्याण का साधन किया करते थे। राजा निमि प्रजापालनार्थ ही यज्ञ का अनुष्ठान किये थे। पूजा का विधान पौराणिक समय में महत्वपूर्ण माना जाता था। जनविश्वास भी पर्याप्त था, इसीलिए वृद्धि के मार्ग खुले हुए थे। ऐसे आचारी संसार में रहकर भी सदा सुखी रहते हैं।

संदर्भ ग्रन्थ –

1.वेदव्यास : श्रीमद्भागवत
2.वेदव्यास : मत्स्यपुराण,
3.आचार्य बल्देव उपाध्याय : वैदिक साहित्य और संस्कृति
4.आचार्य बल्देव उपाध्याय : वैदिक साहित्य का इतिहास
5.भोला शंकर व्यास : भाषा विज्ञान
6.स्वामी करपात्री जी : भक्ति सुधा

शिवशंकर नापित
शोधार्थी, संस्कृत विभाग, शास. ठाकुर रणमत सिंह (स्वशाासी) महाविद्यालय रीवा (म.प्र.)

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- Google Scholar
- EBSCO
- DOAJ
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Indian Streams Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.org